Topic - FACTORS OF SOCIAL CHANGE (सामाजिक परिवर्तन के कारक)

Sol-

प्राचीन ग्रीक दार्शनिक हेराक्लीटस ने कहा है कि एक व्यक्ति के लिए एक ही नदी में दो बार कदम रखना असंभव है। असम्भव है दो कारणों से - (1) दूसरी बार वह नदी ठीक पहले जैसी नहीं रहेगी (11) दूसरी बार व्यक्ति भी पहले जैसा व्यक्ति न होगा दोनों बार नदी और व्यक्ति में भिन्नता होगी। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि परिवर्तन के कई कारक है। इसलिए इसकी व्याख्या किसी एक आधार पर नहीं की जा सकती है। इसलिए परिवर्तन के कारकों को विभिन्न रूपों में यानी प्राकृतिक कारक, जैविकीय, जनसंख्यात्मक, आर्थिक, सांस्कृतिक कारकों पर प्रकाश डालेंगे।

(1) सामाजिक परिवर्तन के प्राकृतिक व भौगोलिक कारक

(Natural and Geographical factors of Social change)

आज मानव विज्ञान के आधिकार बन गया है फिर भी प्राकृतिक या भौगोलिक दशाओं पर पूर्ण रूप से काबू नहीं पाया है। इसलिए कभी-कभी ये सामाजिक परिवर्तन का कारक बन जाते हैं। ये कारक विशेष रूप से उस समय क्रियाशील होती है जब प्रकृति अपने रौद्र रूप में प्रकट होती है। प्रकृति का यह रौद्र रूप हमें - भूकम्प, बाढ़, आकाल, महामारी आदि के समय देखने को मिलती है।

जलवायु भी सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारण बन सकती है। बकल और हटिंगटन (Buckle and Huntington) का कहना है कि जलवायु सभ्यता के विकास और विनाश का भी एक महत्वपूर्ण कारण हो सकती है। बकल का कथन है कि प्राकृतिक या भौगोलिक अवस्थाओं के अनुसार ही मनुष्य की कल्पना या मौलिक विकास संभव होता है।

जहाँ प्राकृतिक के भयंकर रूप - अकाल, बाढ़, तूफान भूकंप आदि देखने को मिलते हैं। वहाँ मनुष्य प्रकृति से इतना अधिक प्रभावित व भयभीत हो जाता है कि वह अपना सिर प्रकृति के आगे झुका देता है और उसी की वन्दना में लग जाता है। इससे उस देश या समाज में विज्ञान को छोड़कर काव्य और धर्म की प्रधानता होती है। इसके विपरीत जहाँ प्रकृति शांत है वहाँ विज्ञान की उन्नति संभव है। कुछ विद्वान सामाजिक संगठन और प्राकृतिक पर्यावरण का अति घनिष्ठ सम्बन्ध बताते हैं। जहाँ परिस्थितियाँ प्रतिकूल हैं, वहाँ पर एक पुरुष एक स्त्री का भरण-पोषण का भार नहीं उठा पाता। इसलिए ऐसे समाज में बहुत से पुरुष मिलकर एक स्त्री से विवाह करते हैं अर्थात वहाँ पर बहुपति विवाह पाया जाता है। इसके विपरीत कृषि प्रधान प्रदेशों में एक पुरुष अनेक स्त्रियों का भरण-पोषण कर सकता है, इसलिए वहाँ बहुपत्नी विवाह की प्रथा पायी जाती है। इसी प्रकार हमारी पोशाकों पर भी प्राकृतिक परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। ठन्डे मौसम में व्यक्ति मोटे चुस्त और गर्म कपड़े पहनते हैं। इसके विपरीत गर्मी में ढीले और हल्के व ठण्डे कपड़े पहने जाते हैं। ठण्डे प्रदेश में कोई भी व्यक्ति दिल्ली या कोलकाता के निवासियों की भाँति मलमल के कपड़े पहनने की बात स्वप्न में भी नहीं सोच सकता। वहाँ के लोग तो पशुओं की खाल पहनकर ठण्ड से अपनी रक्षा करते हैं। दक्षिण-अफ्रीका के रेगिस्तानी प्रदेशों में लोग प्रायः वस्त्रों का प्रयोग करते ही नहीं हैं। इसी प्रकार प्राकृतिक पर्यावरण का हमारे खान-पान पर भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। ठण्ड पड़ने पर हम लोग गर्म चीजें, जैसे - चाय, कॉफी, बादाम शराब आदि का प्रयोग करते हैं, जबकि गर्मी में बर्फ आदि का अधिक प्रयोग किया जाता है। वास्तविकता तो यह है कि कुछ प्राकृतिक कारण इस प्रकार के होते हैं कि उनसे सामाजिक जीवन या सम्बन्ध में क्रांतिकारी परिवर्तन हो सकता है और होता भी है। यहाँ तक की कभी-कभी उपयुक्त प्राकृतिक कारक राजाओं के सिंहासन को भी हिला देते हैं या उन्हें बाध्य कर देते हैं कि वे अपनी राजधानी को दूसरी जगह बदल दें। कभी-कभी भूकम्प बाढ़ आदि से राजधानी इतनी अधिक नष्ट हो जाती है कि राजा को बाध्य होकर राजधानी हेतु स्थान परिवर्तित करना पड़ता है।

समाप्त